करते हैं।

शिक्षा की प्रकृति
(NATURE OF EDUCATION)

शिक्षा की प्रकृति की विभिन्न ढंगों से व्याख्या की जा सकती है।

I. शिक्षा का विश्लेषणात्मक अर्थ (Analytical Meaning of Education)

ऊपर वर्णित विश्लेषण के अन्तर्गत शिक्षा के शाब्दिक, संकुचित, विस्तृत, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा भारतीय विचारधारा के अनुसार तथा पश्चिमी विचारकों तथा शिक्षाशास्त्रियों के विचारों की व्याख्या की गई है। अब इस शिक्षा के विश्लेषणात्मक अर्थ को समझेंगे—

1. शिक्षा—एक जीवनपर्यन्त प्रक्रिया (Education—A Life Long Process)

शिक्षा को केवल शिक्षण संस्थाओं में बच्चों को दी गई शिक्षा तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। यह जन्म से मृत्यु तक चलती रहती है। इसमें मानव व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले सभी पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। अन्य शब्दों में प्रत्येक व्यक्ति जीवनपर्यन्त विभिन्न अनुभवों तथा क्रियाओं द्वारा कुछ न कुछ सीखता रहता है। जैसा कि **मैडम पॉल रिचर्ड** (Paul Richard) ने भी व्यक्त किया है कि व्यक्ति की शिक्षा "उसके जन्म से आरम्भ होनी चाहिए और इसे उसके जीवनपर्यन्त चलते रहना चाहिए।"

2. शिक्षा—निहित प्रक्रियाओं का प्रकटीकरण है (Education—Unfolding of Innate Process)

प्रत्येक बालक में कुछ शक्तियाँ, क्षमताएँ, योग्यताएँ निहित होती हैं और शिक्षा को उनके प्रकटीकरण के लिए अवसर प्रदान करना है न कि बालक के मस्तिष्क में जबर्दस्ती कुछ भरना है। श्री अरविन्द (Aurobindo) का यह मानना है, "शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य उस छिपी हुई आत्मा को बाहर निकालना होना चाहिए, जो सर्वोत्तम है तथा इसे उचित प्रयोग के लिए उत्तम बनाना है।" ("The chief aim of education should be to help the growing soul to draw out in itself which is best and make it perfect for a noble use.")

3. शिक्षा—व्यक्तिगत तथा सामाजिक (Education—Individual as well as Social)

शिक्षा की प्रक्रिया के मनोवैज्ञानिक पक्ष के अनुसार, शिक्षक को बालक की प्रकृति, रुचियों, क्षमताओं तथा सीमाओं का ज्ञान होना चाहिए। प्लेटो (Plato) द्वारा समाज की सेवा के लिए प्रत्येक व्यक्ति की क्षमताओं के अनुरूप शिक्षा की योजना दी गई। विलियम टी. हैरिस (William T. Harris) के अनुसार "शिक्षा समाज के साथ संगठन के लिए व्यक्ति को तैयार करना है। व्यक्ति को इस प्रकार से तैयार करना है कि वह अपने साथियों की सहायता कर सके तथा बदले में उनसे सहायता प्राप्त कर सके।" ("Education is preparation of the individual for the reciprocal union with society, the preparation of the individual so that he can help the fellow men and in return receive their help.") भारतीय दार्शनिकों ने भी इसी विचारधारा पर बल दिया है।

Scanned with CamScanner

4. शिक्षा—एक गतिशील प्रक्रिया (Education—A Dynamic Process)

शिक्षा द्वारा मनुष्य अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरन्तर विकास करता है। शिक्षा जीवन है और जीवन ही शिक्षा है और यही कारण है कि जनजीवन स्थिर नहीं रहता तो शिक्षा स्थिर कैसे रह सकती है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। यह समय, स्थान, आवश्यकताओं, परिस्थितियों तथा समस्याओं के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। यदि शिक्षा गतिशील न होती तो हम विकास पथ पर अग्रसर नहीं हो पाते।

5. शिक्षा—एक द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया (Education—A Bi-polar Process)

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एडम्स (Adams) ने अपने कार्य में शिक्षा को एक द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया माना है। उसने शिक्षा के सम्प्रत्यय का विश्लेषण निम्नलिखित ढंग से किया—"शिक्षा एक द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे को इस प्रकार प्रभावित करता है कि उसमें ऐच्छिक परिवर्तन लाए जा सकें। यह प्रक्रिया उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है; यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक का उद्देश्य निश्चित होता है, और वह इसी उद्देश्य के अनुरूप ही बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाता है। वे साधन जिनसे बालक के व्यवहार में परिवर्तन आता है, दो हैं—(i) अध्यापक के व्यक्तित्व का बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव, (ii) ज्ञान के विभिन्न तत्वों का प्रयोग।"

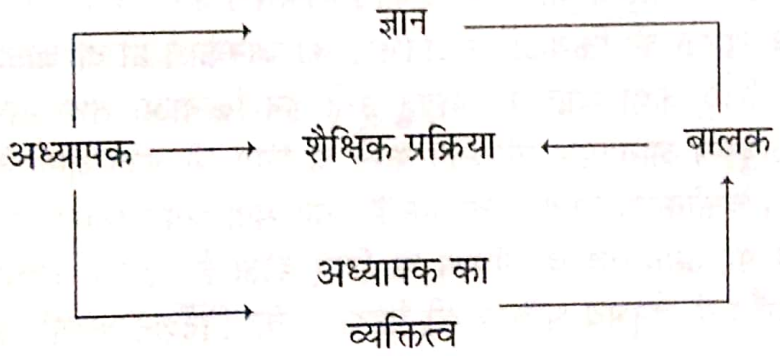

अतः इस प्रक्रिया में अध्यापक तथा बालक दोनों ही महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया इन दोनों के बीच अन्तःक्रिया के कारण ही सम्भव है।

6. शिक्षा—एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया (Education—A Tri-polar Process)

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी (John Dewey) ने भी शिक्षा को एक प्रक्रिया माना है, परन्तु एक द्वि-ध्रुवीय प्रक्रिया की अपेक्षा एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया। उसने इसमें एक तीसरा ध्रुव और जोड़ दिया और वह था सामाजिक वातावरण क्योंकि—

- शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है क्योंकि बालक की शिक्षा सामाजिक वातावरण में ही सम्पन्न होती है।
- यदि हम बालक को शिक्षित करना चाहते हैं तो उसकी अन्तर्निहित शक्तियों के बारे में जानना आवश्यक है, परन्तु यह भी सत्य है कि उसे समाज से अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि बालक का विकास दो कारकों—वातावरण तथा वंशानुक्रम का परिणाम है।
- पाठ्यक्रम का निर्माण समाज की परिस्थितियों तथा आवश्यकताओं के अनुसार ही किया जाता है।

Scanned with CamScanner

अतः सामाजिक वातावरण एक ध्रुव तथा अन्य ध्रुव अध्यापक तथा विद्यार्थी हैं—

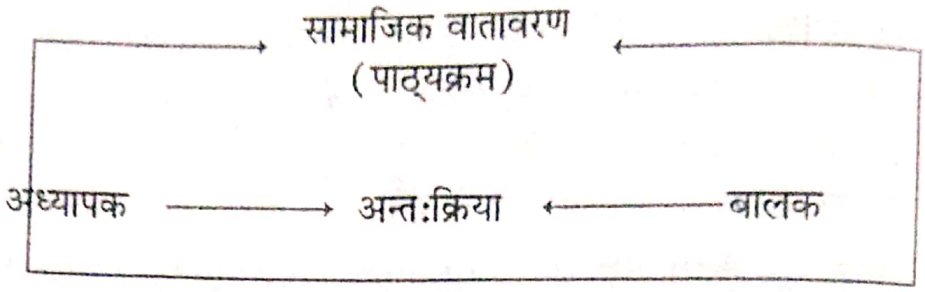

शिक्षा

इस प्रकार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें अध्यापक तथा बालक के मध्य अन्तः क्रिया होती है तथा यह अन्तःक्रिया सामाजिक वातावरण में सम्पन्न की जाती है, जो शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन लाती है।

II. शिक्षा की अनुदर्शी एवं अग्रदर्शी प्रकृति (Retrospective and Prospective Nature of Education)

शिक्षा अनुदर्शी तथा अग्रदर्शी दोनों ही है। यह संक्षिप्त तथा प्रगतिशील दोनों ही है। शिक्षा एक वंशज से दूसरे वंशज को संस्कृति का हस्तान्तरण करती है। आने वाले वंशजों को न केवल अतीत के वंशज की क्रियाओं व अनुभवों की जानकारी ही दी जाती है तथा उन्हें वे क्रियाएँ करने के लिए कहा जाता है अपितु उन्हें इन क्रियाओं तथा अनुभवों में नवीन परिस्थितियों के अनुरूप आवश्यक परिवर्तन करने के लिए भी कहा जाता है। प्राचीन शिक्षा का नवीन शिक्षा से एकीकरण होना आवश्यक है। यह सदा ध्यान रखना चाहिए कि वर्तमान में संचरण अतीत पर आधारित व भविष्य के लिए होता है। इससे अभिप्राय यह है कि वर्तमान की क्रियाएँ एवं अनुभव भविष्य की क्रियाओं का निर्देशन करेंगी। इस प्रकार शिक्षा क्रियाओं एवं अनुभवों का एकीकरण व निरन्तर पुनःसंगठन है। शिक्षा हमारे समाज के सुधार के लिए एक निर्माणात्मक एजेन्सी है। ब्राउन (Brown) ने ठीक ही कहा है "शिक्षा व्यवहार में परिवर्तन लाती है और यदि इसका प्रमुख कार्य केवल संस्कृति का हस्तान्तरण व विकास ही रहा तो गतिशील समाज में यह अपनी भूमिका को कम कर देगी। शिक्षा द्वारा सभी आयु स्तरों पर परिस्थितियाँ प्रदान करते रहना चाहिए परन्तु यह मस्तिष्क की जागरूकता को अभिप्रेरित करने के लिए बालक की योग्यता व परिपक्वता के अनुरूप होनी चाहिए जिससे वह नवीन क्षेत्रों की खोज कर सके तथा भविष्य को वास्तविकता प्रदान कर सके।" ("Education brings changes in behaviour, and if its main functions are to remain mere transmission and enrichment of culture, it will fall short of its role in a dynamic society. Education must also provide situation at all levels but within the maturity and ability of the individual to stimulate a creativeness of mind which can explore new horizon and bring the vision of the future into a living reality.")

शिक्षा का विकास तभी होता है जब प्राचीन विचारधारा नवीन के साथ संगठित होती है। दोनों के संश्लेषण से कुछ नवीन का निर्माण होता है और यह प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलती

Scanned with CamScanner

रहती है। शिक्षा वृद्धि है और वृद्धि कभी रुकती नहीं है। हम प्राचीन के रूप में कुछ सीखते हैं तथा उसी प्राचीन विचारधारा के आधार पर कुछ करते रहते हैं तथा नवीन विचारधारा का उदय होता है। बालक प्रकृति से क्रियात्मक होता है। वह खेलता है तथा बहुत-सी क्रियाएँ करता है परन्तु उसके द्वारा प्राप्त किए गए अनुभव वास्तव में शिक्षा नहीं बन जाते जब तक उन्हें उचित ढंग से निर्देशन न मिले। अत: बालक के अनुभवों को महत्ता प्रदान की जाती है तथा शिक्षा के अन्तर्गत उन्हें विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ व अनुभव प्रदान करने के लिए योजना बनाई जाती है तथा बालक का वांछनीय दिशा में विकास किया जाता है। बालक के अनुभव सुसंगठित होने चाहिए जिससे वे अर्थपूर्ण बन सकें। शिक्षा के अन्तर्गत क्रियाओं व अनुभवों की सहायता से शिक्षार्थी का विकास किया जाता है। प्रत्येक क्रिया व अनुभव का परिणाम किसी न किसी प्रकार का अधिगम और अधिगमकर्त्ता के मस्तिष्क का विकास होता है। इसी के परिणामस्वरूप अधिगमकर्त्ता नवीन क्रियाएँ व अनुभव करता है और इसी प्रकार शिक्षा प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है, जो आज अग्रदर्शी है वह कल अनुदर्शी बन जाता है।

शिक्षा की प्रकृति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- शिक्षा उद्देश्यपूर्ण है।
- शिक्षा सुनियोजित है।
- शिक्षा अकस्मात् होती है।
- शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षा प्रभावी है।
- शिक्षा सन्तुलित विकास है।
- शिक्षा मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक है।
- शिक्षा प्रक्रिया और परिणाम है।
- शिक्षा निजी विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा जीवन की प्रक्रिया है।
- शिक्षा का सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक स्वरूप है।
- शिक्षा एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है।
- शिक्षा एक एकीकृत प्रक्रिया है।
- शिक्षा व्यक्तिगत सामंजस्य की प्रक्रिया है।

III. शिक्षा विज्ञान एवं कला है (Education is Science as well as an Art)

शिक्षा की प्रकृति के विषय में हमें यह जानकारी प्राप्त करनी है कि यह विज्ञान है या कला, वास्तविक विज्ञान या आदर्शात्मक विज्ञान है, क्या यह जीवन में नैतिक निर्णय दे सकती है। विज्ञान है या कला यह निर्णय लेने से पहले यह जानना आवश्यक है कि 'कला' तथा 'विज्ञान' शब्दों के वास्तविक अर्थ क्या हैं।

शिक्षा : एक विज्ञान—विज्ञान शब्द को ज्ञान के क्रमबद्ध अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया है जो कारण तथा प्रभाव के बीच सम्बन्ध का वर्णन करता है। विज्ञान केवल

Scanned with CamScanner

तथ्यों का संग्रह करना नहीं है, क्योंकि तथ्यों के संग्रह से विज्ञान का निर्माण नहीं हो सकता जैसा कि **पोइनकेयर** (Poincare) ने कहा भी है, ''जैसे एक मकान पत्थरों से बनता है, उसी प्रकार विज्ञान तथ्यों का निर्माण है, परन्तु जैसे पत्थरों को जोड़कर घर बनता है, वैसे तथ्यों का संग्रह विज्ञान नहीं है।'' ("Science is built of facts as a house is built of stones; but an accumulation of facts is no more a science than a heap of stones is a house.")

शिक्षा में इस परिभाषा का प्रयोग करते हुए हमें यह ज्ञात होता है कि शिक्षा ज्ञान की वह शाखा है जहाँ विभिन्न तथ्यों का क्रमबद्ध रूप से संगठन, वर्गीकरण तथा विश्लेषण किया गया है। इस विचारधारा के अनुसार शिक्षा पूर्ण रूप से विज्ञान है।

शिक्षा : वास्तविक तथा आदर्शात्मक विज्ञान (Education : Positive and Normative Science)—वास्तविक विज्ञान के रूप में शिक्षा, शैक्षिक तथ्यों से सम्बन्धित है। यह प्रदत्त परिस्थितियों में **क्या है, क्या था** और **क्या होगा**, की व्याख्या करती है। इन सभी कथनों की प्रायोगिक रूप से पुष्टि की जा सकती है। ये कथन व्यक्तिगत विचारधारा पर आधारित नहीं होते। दूसरी ओर आदर्शात्मक विज्ञान 'क्या होना चाहिए' से सम्बन्धित है। यह नैतिक निर्णय लेने में या नैतिक रूप से क्या ठीक है, क्या गलत है, का कोई विरोध नहीं करता ? यह नैतिक निर्णय उद्घोषित करता है। उचित पाठ्यक्रम क्या होना चाहिए ? शिक्षा बालकेन्द्रित होनी चाहिए। इस प्रकार की खोज तुरन्त ही आदर्श खोज बन जाती है।

शिक्षा : सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक विज्ञान (Education : Theoretical and Applied Science)—शिक्षा एक सैद्धान्तिक विज्ञान है क्योंकि यह विभिन्न प्रकार के सिद्धान्त प्रदान करती है जैसे मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त, दार्शनिक सिद्धान्त, नैतिक सिद्धान्त आदि। जब शिक्षा इन सिद्धान्तों को व्यक्तित्व के सर्वोत्तम विकास के लिए प्रयोग में लाती है तो यह एक प्रायोगिक विज्ञान बन जाती है।

शिक्षा : व्यावहारिक विज्ञान (Education : Practical Science)—शिक्षा को एक व्यावहारिक विज्ञान भी माना जाता है, क्योंकि शिक्षा जीवन की विभिन्न व्यावहारिक समस्याओं का हल ढूँढ़ने में व्यक्ति की सहायता करती है। जैसा कि **जॉन डीवी** (John Dewey) द्वारा कहा भी गया है ''शिक्षा अनुभवों के पुनःनिर्माण की एक सतत् प्रक्रिया है। यह मनुष्य में ऐसी क्षमताएँ विकसित करती है जो उसे अपने वातावरण को नियन्त्रित करने तथा अपनी विभिन्न आवश्यकताएँ पूरी करने में सहायता करती है।'' ("Education is a process of living through continuous reconstruction of experiences. It is the development of all those capacities in the individual which will enable him to control his environment and fulfil his possibilities.")

शिक्षा : सामाजिक विज्ञान (Education : Social Science)—शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें बालक को पूर्ण रूप से सामाजिक जीवन के लिए तैयार किया जाता है। सामाजिक संस्थाएँ—घर, विद्यालय, समाज, राज्य आदि बालक के शरीर, मन और आत्मा को प्रभावित करते हैं। शिक्षा एक सामाजिक धारणा है। यह दार्शनिक रूप में प्रस्तुत, मनोवैज्ञानिक रूप से विकसित तथा सामाजिकता पर आधारित है। शिक्षा को सभी मानव समाजों की एक आवश्यक स्थिति माना गया है। शिक्षा सम्पूर्ण व्यक्ति से सम्बन्ध रखती है।

Scanned with CamScanner

इसमें एक समाज में रहने वाले व्यक्तियों की शैक्षिक क्रियाओं का अध्ययन सम्मिलित किया जाता है।

शिक्षा : विशिष्ट विज्ञान (Education : Specific Science)—शिक्षा एक विशिष्ट विज्ञान भी है क्योंकि इसके अन्तर्गत उन विशिष्ट सिद्धान्तों, तकनीकों, व्यूह रचनाओं, विधियों आदि का अध्ययन किया जाता है जो व्यक्तित्व के विकास को प्रोत्साहित करते हैं।

शिक्षा : विकासशील विज्ञान (Education : Developing Science)—शिक्षा एक विकासशील विज्ञान भी है क्योंकि शिक्षा स्थिर नहीं अपितु गतिशील है। शिक्षा के अन्तर्गत निरन्तर अनुसंधान होते रहते हैं तथा शिक्षा प्रक्रिया में परिवर्तन होता रहता है। अनुसंधानों के परिणामस्वरूप ही शिक्षा के प्रत्येक पहलू में निरन्तर नवीन तथ्य सामने आते रहते हैं इसीलिए इसे अनुभवों की पुन:संरचना व पुनर्गठन माना जाता है।

शिक्षा : एक कला (Education : An Art)—कला भी एक क्रमबद्ध ज्ञान है परन्तु यह विशिष्ट समस्याओं का विशिष्ट हल बताती है। **जे. एन. केन्ज** (J. N. Keynes) के शब्दों में, ''कला एक प्रदत्त लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नियमों की एक प्रणाली है।'' ("An art is a system of rules for attainment of a given end.")

कला का कार्य तुरन्त ही नियमों का निर्माण करना है, जो नीतियों के लिए प्रायोगिक होती है। कला का प्रायोगिक तथ्य ही इसे विज्ञान से पृथक करता है जो केवल सैद्धान्तिक हो सकती है। **कोसा** (Cossa) ने ठीक ही कहा है, ''विज्ञान हमें जानना सिखाता है; कला हमें करना सिखाती है। एक शब्द में विज्ञान व्याख्या तथा विस्तार करता है; कला दिशा देती है, कला नीतियाँ प्रस्तावित करती है।'' ("A science teaches us to know; an art teaches us to do. In a word, science explains and expounds art directs; art imposes precepts or proposes rules.")

कला की इस परिभाषा का प्रयोग करते हुए, हमें यह ज्ञात होता है कि शिक्षा कुछ विशेष तत्वों में कला भी है क्योंकि शिक्षा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में समस्याओं को हल करने में प्रायोगिक सलाह प्रदान करती है। शिक्षा बालक की ज्ञान प्राप्ति, एकीकृत विकास, सामाजिक तथा व्यावसायिक कुशलता तथा अनुभवों का निरन्तर पुनर्निर्माण तथा पुनर्गठन करने में सहायता देती है।

IV. शिक्षा : सामाजिक प्रक्रिया के रूप में (Education : As a Social Process)

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जो बालक को सामाजिक बनाती है तथा उसके व्यवहार में सामाजिक दृष्टि से परिवर्तन लाती है। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है बालक में उन सामाजिक गुणों व सामाजिक भावना का विकास करना जो उसे अपने देश का उत्तरदायी नागरिक बनने के योग्य बनाए और अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए प्रशिक्षित करे। **जॉन डीवी** (John Dewey) ने ठीक ही कहा है, ''जिस प्रकार मनोवैज्ञानिक जीवन के लिए पोषण और प्रजनन का जो महत्व है, वही महत्व सामाजिक जीवन के लिए शिक्षा का है।'' ("What nutrition and reproduction are to psychological life, education is to social life.") सामाजिक शक्तियाँ सामाजिक वातावरण से शिक्षक और शिक्षार्थी को पाठ्यवस्तु प्रदान करती हैं। जॉन डीवी का मानना है कि बालक उस समाज में रहता है जिस समाज का वह सदस्य है, अतएव शिक्षा का काम है कि वह व्यक्ति को उस

Scanned with CamScanner